मूल्य : एक प्रति ` 0.50 वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद

वर्ष 17, अंक 1 जनवरी 2012

अंदर के पृष्ठों में . . . . . ➤

'क्या वयस्क वास्तव में वयस्क हो गए हैं?' एक संगोष्ठी	2
अभयपुरी पुस्तक मेला	3
भारतीय भाषाओं पर विचारगोष्ठी	3
चेन्नई में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	4
जयपुर में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	4
जोरहाट पुस्तक मेला	5
पुस्तक समीक्षा	6
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित 2011 की पुस्तकें	7
ने.बु.ट्र. परिसर में नव वर्ष सम्मिलन	8
चिट्ठीघर	8

नवीनतम प्रकाशन

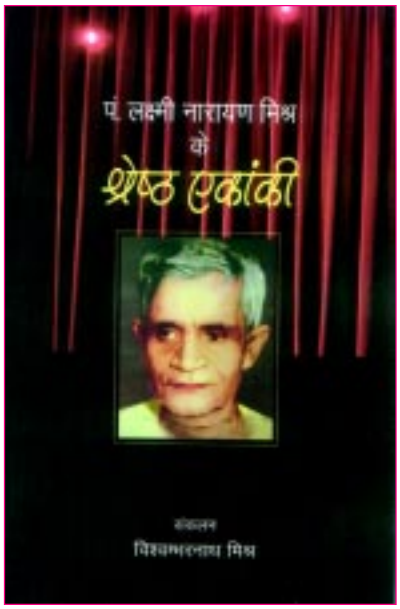

पं. लक्ष्मी नारायण मिश्र के श्रेष्ठ एकांकी

संकलन : विश्वम्भरनाथ मिश्र

पृ. 204 ` 120

गांधी-नेहरू-पटेल पत्र-आधारित पुस्तकों का लोकार्पण

लोकार्पण का एक दृश्य

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा अंग्रेजी में प्रकाशित तीन पुस्तकों का नई दिल्ली में 2 नवंबर, 2011 को लोकार्पण किया गया। इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में लोकार्पित ये पुस्तकें थीं—*गांधी-नेहरू करेस्पोंडेंस* (संपा. : प्रो. अर्जुन देव) तथा *नेहरू-पटेल करेस्पोंडेंस* एवं *गांधी-पटेल : लेटर्स एंड स्पीचेस* (दोनों के संपा. : डॉ. नीरजा सिंह)। पुस्तकों का लोकार्पण सेंटर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, जे.एन.यू. की प्रो. मृदुला मुखर्जी ने किया। उन्होंने कहा, "नेताओं के बीच पत्रों का आदान-प्रदान लोगों को इन नेताओं के पुनर्आकलन में सहायता पहुंचाता है और उन्हें किसी नतीजे पर पहुंचने में भी मदद देता है।" उन्होंने कहा कि इन पुस्तकों के प्रकाशन के कारण ही पाठक उन पत्रों को भी देख-पढ़ पाने का अवसर पाने में समर्थ हुए हैं जो सिर्फ पुस्तकालयों-संग्रहालयों में ही संरक्षित हैं।

एनबीटी के अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा ने कहा कि इन पुस्तकों का अत्यधिक महत्व है क्योंकि बहुत ही कम लोगों को इन राजनेताओं, विशेषकर नेहरू-पटेल तथा गांधी-पटेल, के बीच के रिश्तों की जानकारी है।

आंबेडकर यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ लिबरल स्टडीज के डीन प्रो. सलिल मिश्रा ने पुस्तक *नेहरू-गांधी करेस्पोंडेंस* पर बोलते हुए कहा कि "हम यह मानकर चलते हैं कि हम उनके बारे में सब कुछ जानते हैं। लेकिन इस पुस्तक को पढ़ने के बाद मैं उनके संबंधों के कई अनछुए पहलुओं को जान पाया।" उन्होंने आगे कहा कि जैसा आम तौर पर सब सोचते हैं उन दोनों के बीच एकदम सीधा रिश्ता नहीं था। कई बार नेहरू गांधी की आलोचना भी करते थे। दोनों के बीच अनेक मतभेदों की बात भी उन्होंने कही। उन्होंन कहा कि वे अपने मतभेद खुलकर सामने रखते थे। अगर इन मतभेदों की अभिव्यक्ति नहीं होती तो राष्ट्रीय आंदोलन संभव नहीं होता। उनकी दृष्टि अलग-अलग थी और उनके रास्ते भी अकसर समान नहीं होते थे, फिर भी राष्ट्रीय आंदोलन में दोनों साथ मिलकर लड़े।

नेहरू-पटेल करेस्पोंडेंस पुस्तक पर सेंटर फॉर हिस्टोरिकल स्टडीज, जे.एन.यू. की प्रो. सुचेता महाजन ने कहा, "यह पुस्तक न केवल अकादेमिक रूप से बल्कि राजनीतिक रूप से भी महत्वपूर्ण है।" उन्होंने विस्तार से इन दोनों के बीच अनेक मुद्दों, यथा—दिल्ली में दंगा, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता, संकट के समय में मुस्लिम, हिंदू एवं सिख के बारे में उनकी चिंता और कश्मीर जैसे जटिल प्रश्नों की भी चर्चा की। उन्होंने इस पुस्तक को 'अमूल्य' बताया क्योंकि यह उस अवधि को 'कवर' करता है जिस अवधि के दस्तावेज उपलब्ध

नहीं हैं। यह पुस्तक पाठकों में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता जैसे प्रश्नों पर प्रकाश डालती है।

गांधी-पटेल : लेटर्स एंड स्पीचेस पुस्तक पर बोलते हुए इतिहास विभाग, जीएस एंड मेरी कॉलेज की डॉ. विशालाक्षी मेनन ने पुस्तक में इन दो राजनेताओं के बीच के दिलचस्प क्षणों का विवरण दिया। उन्होंने कहा कि दोनों नेताओं के बीच कई मुद्दों पर सहमतियां थीं। अगर पटेल को गांधी जी से कोई मतभेद होता तो वे इसे सीधे-सीधे उन्हें बता देते। उन्होंने कहा, ''यद्यपि यह कालक्रमानुसार नहीं है फिर भी हम उन दोनों के संबंधों को समझने में समर्थ होते हैं।''

इस अवसर पर लोकार्पित पुस्तकों के संपादक प्रो. अर्जुन देव एवं डॉ. नीरजा सिंह भी बोलीं। सभी वक्ताओं की यह आम राय थी कि ये पुस्तकें बहुत-सारी गलत धारणाओं को साफ करने में मदद करती हैं, जो गांधी-नेहरू, नेहरू-पटेल और गांधी-पटेल के बीच की थीं।

इससे पहले, ट्रस्ट निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने अपने स्वागत संबोधन में उस पुस्तकमाला का परिचय दिया जिसके अंतर्गत ये पुस्तकें छपीं। उन्होंने कहा कि इस पुस्तकों के जरिये बिखरे हुए बहुत-सारे पत्र एवं तथ्य सामने आए हैं जो ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में चीजों को समझने में मदद करते हैं। एक आम पाठक स्वतंत्रता संघर्ष के दिनों के अनेक महत्वपूर्ण क्षणों एवं मुद्दों को कहीं अधिक साफ तरीके से देख और समझ सकता है।

'क्या वयस्क वास्तव में वयस्क हो गए हैं?' एक संगोष्ठी

श्रोताओं से अपने अनुभव साझा करते हुए सुश्री जुज्जा वीजलैंडर एवं श्री लेनार्ट जॉनसन; दाएं श्री एम.ए. सिकंदर

21 अक्तूबर, 2011 को दिल्ली विश्वविद्यालय के अंतर्गत लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमन में *हैव द ग्रोन अप्स ग्रोन अप? : रिविजिटिंग इन लाइफ* (क्या वयस्क वास्तव में वयस्क हो गए हैं? : जीवन के स्वप्नचित्र को एक बार फिर देखें) विषय पर एक अंतर्क्रियात्मक सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें स्वीडन की प्रख्यात लेखिका सुश्री जुज्जा वीजलैंडर तथा प्रख्यात पत्रकार एवं मनोचिकित्सक श्री लेनार्ट जॉनसन ने भाग लिया। सत्र का आयोजन नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के अनुभाग राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र द्वारा लेडी श्रीराम कॉलेज फॉर वीमन के प्राथमिक शिक्षा विभाग के सहयोग से किया गया।

प्रख्यात स्वीडिश बाल साहित्य लेखिका तथा ट्रस्ट से प्रकाशित *मामा मू ऑन ए स्विंग* (कजरी गाय झूले पर) की लेखिका सुश्री जुज्जा वीजलैंडर इस अवसर पर सम्मानित अतिथि थीं। उन्होंने अभिभावकों को सुझाव दिया कि वे अपने बच्चों को ऊंची आवाज में कहानियां बोलकर सुनाएं। उन्होंने कहा, ''हालांकि मैं नई तकनीक की विरोधी नहीं हूं लेकिन आपकी आवाज से बढ़कर कुछ और नहीं है, यह आप ही हैं जो अपने बच्चे को सबसे बेहतर ढंग से समझ सकते हैं।''

सुश्री वीजलैंडर ने कहा कि बच्चे अपनी भाषा में स्वयं को अभिव्यक्त नहीं कर पाते जिससे वे उदास हो जाते हैं। उन्हें अगर आपके द्वारा प्रामाणिक भाषा में अपने तरीके से परियों की कथाएं तथा अन्य कहानियां सुनाई जाएं तो उन्हें संतुष्टि मिलती है और बोलने का साहस पैदा होता है। क्या सही है और क्या गलत है इसे समझने में भी सहायता मिलती है।

एक मनोचिकित्सक के रूप में अपना अनुभव साझा करते हुए श्री लेनार्ट जॉनसन ने कहा, ''मैं बच्चों के बारे में कुछ निष्कर्ष बता सकता हूं–बच्चों की कल्पनाओं को सुनें, अगर वे कुछ पूछते हैं तो उसका जवाब दें, उनकी अवहेलना न करें, उनकी मार-पिटाई न करें–ये सब उनके जीवन पर असर डालते हैं।'' उन्होंने आगे कहा, ''बच्चों की पुस्तकें महत्वपूर्ण होती हैं; बच्चे वयस्क होते हैं जब वे एक साथ पढ़ते हैं और उन्हें बढ़ने में मदद करते हैं।''

इससे पहले, ट्रस्ट निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने वक्ताओं और अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा, ''निकट भविष्य में इस कॉलेज के साथ मिलकर हम और भी कार्यक्रम आयोजित करेंगे।'' उन्होंने घोषणा की कि ''एनबीटी शीघ्र ही दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय में एक नया पुस्तक विक्रय केंद्र खोलेगा।''

एनबीटी के पूर्व निदेशक श्री अरविंद कुमार भी इस अवसर पर बोले और एनबीटी को उन्हें आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद दिया। इस सत्र में बड़ी संख्या में श्रोता पहुंचे। श्रोताओं ने वक्ताओं से बाल साहित्य के संबंध में सीधा संवाद भी किया। कार्यक्रम के अंत में रा.बा.सा.कें. के संपादक श्री मानस रंजन महापात्र एवं सुश्री सुजाता चक्रवर्ती ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उपस्थित जनसमूह का एक दृश्य

अभयपुरी पुस्तक मेला

अभयपुरी के गांधी मैदान में 26 नवंबर से 3 दिसंबर, 2011 के दौरान अखिल असम प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ तथा उत्तर सलमारा प्रशासन के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा अभयपुरी पुस्तक मेला का आयोजन किया गया। इस मेला का उद्घाटन करते हुए प्रख्यात साहित्यकार और असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री कनकसेन डेका ने कहा, ''असमिया साहित्य एक नई ऊंचाई पर चढ़ रहा है। असमिया लेखकों की कलम से अनेक उत्कृष्ट साहित्य का लेखन हो रहा है। इसलिए मैं यह पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि विश्व भर में हजारों भाषाओं के विलुप्त होने के बावजूद असमिया उन चुनिंदा भाषाओं में एक है जो जीवित रहेगी।'' इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात पत्रकार श्री हैदर हुसैन ने कहा, ''असम राज्य की भौगोलिक चौहद्दी के भीतर भी असमिया भाषा ने अनेक संकट झेली है। समय-समय पर कुछ जातीय समूहों द्वारा रोष दर्शाने के पीछे वाजिब वजहें रही हैं। उस रोष के शमन और निवारण हेतु हमें असमिया साहित्य में राज्य के प्रत्येक जातीय समूह के सामाजिक-सांस्कृतिक लोकाचारों और रीति-रिवाजों को समाविष्ट करना चाहिए। प्रत्येक जातीय समूह असमिया साहित्य के दर्पण में अपना प्रतिबिंब देख सकने में सक्षम हो ऐसा लेखन असमिया साहित्य में होना चाहिए।'' इस अवसर पर 'सांचीपात' नाम से निकाली गई एक स्मारिक का भी श्री हुसैन ने लोकार्पण किया।

स्थानीय विधायक श्री चंदन कुमार सरकार ने सम्मानित अतिथि के रूप में किए गए अपने संबोधन में लोगों से अधिक से अधिक पुस्तकें पढ़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, ''सामान्य विश्वास के बावजूद राजनीतिज्ञों को नए-नए कानूनों से स्वयं को भिज्ञ रखने हेतु काफी पुस्तकें पढ़नी पड़ती है।'' उत्तर सलमारा, अभयपुरी के एसडीओ (सिविल) श्री जे.वी.एन. सुब्रह्मण्यम ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत किया। डीआरडीए, बोंगाइगांव के परियोजना निदेशक श्री एन. जेफ्री ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

इससे पहले, हजारों स्कूली बच्चों ने एक रंगारंग पुस्तक मार्च निकाला जिसने पुस्तकप्रेमियों का मन मोह लिया। इस अवसर पर बच्चों ने एक पुस्तक मानसिकता वाले समाज के निर्माण हेतु काम करने की शपथ ली।

मेले के मिन्न-भिन्न दिनों में सभी आयुवर्ग के पुस्तकप्रेमियों के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रम किए गए। इनमें शामिल थे—उत्तर-पूर्व कवयित्री गोष्ठी, प्रख्यात बाल थियेटर विशेषज्ञ डॉ. आशीष घोष द्वारा एक थियेटर कार्यशाला, 'मोचाक' के संपादक, डॉ. शांतनु तामुली द्वारा असमिया स्पेलिंग बी प्रतियोगिता, प्रख्यात कवि, अनुभव तुलसी के साथ 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम तथा के.के. बिड़ला फाउंडेशन के निदेशक श्री निर्मल कांति भट्टाचार्जी द्वारा 'द अदर टैगोर' विषय पर एक वार्ता। प्रख्यात करिअर सलाहकार, श्री राजीव डेका ने युवाओं के लिए एक करिअर सुझाव सत्र में युवाओं का मार्गदर्शन किया। एक स्थानीय स्वयंसेवी संगठन, आरण्यक द्वारा मेले के अंतिम दिन से एक दिन पहले जैवविविधता पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बहुत-सारे पुस्तक लोकार्पण कार्यक्रमों के अलावा असम साहित्य सभा द्वारा एक बहुभाषी कवि गोष्ठी के आयोजन ने इस पुस्तक मेले को एक अलग ही रंगत और रौनक प्रदान किया।

असम के हाल ही में दिवंगत हुए सांस्कृतिक दूत भूपेन हजारिका एवं ज्ञानपीठ विजेता साहित्यकार मामोनी रायसम गोस्वामी की याद में मेले के अंतिम दिन गुवाहाटी के कामरूप सांस्कृतिक दल द्वारा एक सांगीतिक संध्या का आयोजन किया गया।

भारतीय भाषाओं पर विचारगोष्ठी

ईटानगर में भारतीय भाषाओं के विकास एवं संरक्षण के लिए कार्यरत नागरी लिपि परिषद द्वारा 24-25 सितंबर, 2011 को एक दो दिवसीय पूर्वोत्तर नागरी लिपि संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आयोजन ईटानगर के डेरा नाटुंग गवर्नमेंट कॉलेज में हुआ। राजीव गांधी यूनिवर्सिटी के कुलपति एवं मुख्य अतिथि प्रो. तामो मिबांग ने उपस्थित जनसमूह से कहा कि हिंदी भाषा में राष्ट्र की जन भाषा बनने का 'स्कोप' है। उन्होंने आगे कहा, लेकिन हिंदी सीखने के अलावा यह भी अत्यावश्यक है कि हम अपनी बोलियों की भी संरक्षा करें जो इन दिनों खतरे में हैं।

संगोष्ठी में देश भर से शिक्षाविदों की भागीदारी हुई जिसमें पूर्वोत्तर के राज्यों का बौद्धिक तबका भी शामिल था। ट्रस्ट की ओर से हिंदी के सहायक संपादक डॉ. ललित किशोर मंडोरा ने इस संगोष्ठी में भाग लिया। कॉलेज के शिक्षक एवं छात्रों ने ट्रस्ट से उनके कॉलेज में एक पुस्तक प्रदर्शनी लगाने की मांग की।

चेन्नई में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा नेशनल इंस्ट्रूमेंटल मीडिया इंस्टीट्यूट (एन.आई.एम.आई.) तथा बुक सेलर्स एंड पब्लिशर्स एसोसिएशन ऑफ साउथ इंडिया (बी.ए.पी.ए.एस.आई.) के सहयोग से एन.आई.एम.आई. कैम्पस में 8 से 18 नवंबर, 2011 तक पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

पाठ्यक्रम का उद्घाटन एशियन स्कूल ऑफ जर्नलिज्म के अध्यक्ष तथा प्रख्यात मीडिया व्यक्तित्व श्री शशि कुमार ने किया। लिखित शब्दों की महत्ता के बारे में उन्होंने कहा, ''लेखन ने समाज का लोकतांत्रीकरण किया और उसे सोपानीकरण से मुक्त किया।'' और जहां तक प्रौद्योगिकी का संबंध है श्री शशि कुमार ने कहा कि यह पठन और लेखन की नए ढंग से व्याख्या करेगा। और इसीलिए, ''लिखित शब्द भविष्य में हमें क्या देंगे यह सोचते हुए हम एक दिलचस्प समय में रह रहे हैं।'' उन्होंने एनबीटी की ऐसे पाठ्यक्रमों के देशभर में आयोजन के प्रयासों की प्रशंसा की। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं में थे–बी.ए.पी.ए.एस.आई. के अध्यक्ष श्री चोक्कलिंगम तथा एन.आई.एम.आई. के निदेशक श्री मणिवन्नन।

प्रख्यात प्रकाशन व्यावसायिकों के द्वारा प्रकाशन के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्यान दिया गया जिससे पाठ्यक्रम के 45 प्रतिभागियों ने लाभ उठाया। जिन विशेषज्ञों ने प्रकाशन पाठ्यक्रम के विविध आयामों पर अपने विचार व्यक्त किए, वे थे–श्री श्रीधर बालन, सुश्री राधिका मेनन, सुश्री ज्योति पंडालाई, सुश्री सुधा सतीश, डॉ. जयगणेश, डॉ. पझा अध्यमन, सुश्री संध्या राव, सुश्री लक्ष्मी विजयकुमार, श्री राधाकृष्णन, श्री 'सेरा' रामकृष्णन, सुश्री मनीषा, सुश्री विनुता माल्या, श्री तमोजीत रॉय, सुश्री पद्मजा अनंत, श्री सुबीर रॉय, श्री पी. सरकार, सुश्री इंदिरा चंद्रशेखर, सुश्री सुभाश्री कृष्णास्वामी, श्री बलवीर सिंह, श्री कल्याण बनर्जी, श्री के.एस. पदमनाबन, श्री एन.के. भट्टाचार्जी तथा श्री विक्रम दास।

समापन समारोह में प्रख्यात लेखक श्री रामकृष्णन तथा *फ्रंटलाइन* के संपादक श्री विजय शंकर सम्मानित अतिथि थे। अपने संबोधन में श्री रामकृष्णन ने उन व्यक्तियों के अग्रगामी प्रयासों के बारे में बात की जिनके लिखित शब्दों के प्रति अध्यवसाय, उद्यम और प्यार ने आज के तमिल प्रकाशन को आकार दिया। ट्रस्ट की संयुक्त निदेशक (प्रशा. एवं वित्त) श्रीमती फरीदा एम नाईक ने भी इस अवसर पर अपनी बातें रखीं। बाद में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र बांटे गए। पाठ्यक्रम का समन्वय ट्रस्ट में सहायक निदेशक श्री सुमित भट्टाचार्जी ने किया।

जयपुर में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा पुस्तक प्रकाशन में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्घाटन राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी में 5 सितंबर, 2011 को किया गया। जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. के.एल. शर्मा ने पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरिनरी एंड एनिमल साइंसेज, बीकानेर के कुलपति प्रो. ए.के. गहलौत सम्मानित अतिथि थे। गणमान्य अतिथियों में रत्नसागर पब्लिकेशंस, दिल्ली के सलाहकार श्री श्रीधर बालन उपस्थित थे। 5-17 सितंबर तक आयोजित इस पाठ्यक्रम के सहयोगी थे राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी तथा राजस्थान प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ। महत्वपूर्ण प्रकाशन संस्थानों के 23 स्रोत व्यक्तियों ने प्रतिभागियों से प्रकाशन क्षेत्र के अपने अनुभव साझा किए। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम से 34 प्रतिभागी लाभन्वित हुए।

राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी के निदेशक डॉ. आर.डी. सैनी ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए लोगों में घटती पठन आदत के प्रति चिंता जताई। श्री श्रीधर बालन की चिंता थी कि अंग्रेजी भाषा के प्रकाशकों की तरह क्षेत्रीय भाषा प्रकाशकों के पास एक संगठित और सुनियोजित वितरण व्यवस्था नहीं है। राजस्थान प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ के अध्यक्ष श्री कैलाश रावत ने सूचना दी कि प्रकाशन के मामले में दिल्ली के बाद जयपुर देश का दूसरा सबसे बड़ा शहर है।

उद्घाटन संबोधन में प्रो. के.एल. शर्मा ने इस बात पर खुशी प्रकट की कि एनबीटी इस तरह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का जयपुर में आयोजन कर रहा है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक अच्छी पुस्तक में मनोरंजन के अलावा सदैव एक संदेश भी होना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में प्रो. ए.के. गहलौत ने कहा कि एनबीटी जैसी

सरकारी संस्थाएं पुस्तक एवं पठन आदत में विकास के अलावा प्रकाशन उद्योग के विकास हेतु भी काम कर रही हैं यह अच्छी बात है।

पाठ्यक्रम का समापन समारोह 17 सितंबर को हुआ, जिसमें राजस्थान लोक सेवा आयोग के सचिव श्री के.के. पाठक, आई.ए.एस. मुख्य अतिथि थे। श्री पाठक ने अपने संबोधन में जहां पुस्तक पढ़ने के महत्व पर बल दिया वहीं उन्होंने पठन आदत में गिरावट के प्रति चिंता भी व्यक्त की।

इससे पहले, एनबीटी के निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने देशभर में एनबीटी द्वारा प्रकाशन पाठ्यक्रम आयोजित किए जाने की जानकारी दी। उन्होंने 2012 में जयपुर में एक पुस्तक मेला के आयोजन की भी घोषणा की। अंत में पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

ट्रस्ट के सहायक निदेशक तथा पाठ्यक्रम के समन्वयक श्री सुमित भट्टाचार्जी ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापन किया।

जोरहाट पुस्तक मेला

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा जोरहाट, असम में पहली बार पुस्तक मेला का आयोजन किया गया। यह आयोजन असम एकेडमिक सेंटर, जोरहाट जिला प्रशासन तथा अखिल असम प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ के सहयोग से 15 से 23 अक्तूबर, 2011 के दौरान जोरहाट जिला समिति मैदान में किया गया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक तथा पूर्वी क्षेत्र के ऑयल टेक्नोलॉजी एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. एस.के. रॉय ने पुस्तक मेला का उद्घाटन करते हुए कहा कि ''जैसे एक गृहिणी अपने परिवार के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने रसोईघर में एक जिम्मेवार विशेषज्ञ की भूमिका निभाती है उसी तरह और उसी उत्साह से उसे अपने बच्चों को अपने परिवेश और पर्यावरण से परिचय कराना पड़ता है तथा हमारी जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करना पड़ता है। इसी तरह से कोई अपने दैनंदिन जीवन में वैज्ञानिक प्रवृत्ति को आत्मसात कर सकता है।''

असम एकेडमिक सेंटर द्वारा प्रकाशित पुस्तक मेला स्मारिका 'प्रज्ञा' का लोकार्पण करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार और शिक्षाविद् जोगेन चेतिया ने इस आशंका को निर्मूल बताया कि टीवी, इंटरनेट और ई-बुक्स जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कभी भी पुस्तक जैसी परंपरागत पठन-पद्धति को बेदखल कर सकते हैं।

जोरहाट के उपायुक्त श्री रमेश चंद ने जोरहाट के असम के एक बौद्धिक शहर होने के इतिहास की संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर जोरहाट की एस पी श्रीमती संयुक्ता पराशर, अखिल असम प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता संघ के अध्यक्ष श्री अजित कुमार बर्मन तथा असम एकेडमिक सेंटर के अध्यक्ष डॉ. विष्णु प्रसाद शर्मा ने भी अपने संबोधन किए।

इससे पहले, अपने स्वागत उद्बोधन में ट्रस्ट-निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने घोषणा की कि एनबीटी शीघ्र ही गुवाहाटी में अपना एक क्षेत्रीय कार्यालय खोलेगा, साथ ही पूर्वोत्तर भारत के पाठकों के लिए एक विक्रय पुस्तक केंद्र भी यहां खोला जाएगा। उद्घाटन से पूर्व शहर में स्कूली बच्चों द्वारा एक रंगारंग पुस्तक मार्च भी निकाला गया। पुस्तक मेले में असम, त्रिपुरा, कोलकाता, दिल्ली तथा नागपुर के लगभग 90 प्रकाशकों के 200 से अधिक स्टॉल लगे थे। अंतरराष्ट्रीय रसायन वर्ष तथा वन वर्ष के मद्देनजर एक विशेष विज्ञान पार्क का निर्माण भी मेला मैदान में किया गया था जहां कुछ विज्ञान एवं शोध-संस्थाओं द्वारा अपनी उपलब्धियों और आविष्कारों को प्रदर्शित किया गया। 'विज्ञान प्रसार' पत्रिका द्वारा विज्ञान आधारित कुछ कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

पुस्तक मेले के दौरान दो पैनल विमर्श भी आयोजित किए गए। 'अनुवाद में विज्ञान साहित्य : असमिया भाषा के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर आयोजित विमर्श में डॉ. विजय कृष्ण देव शर्मा संचालक के रूप में थे जबकि डॉ. डी.सी. गोस्वामी तथा डॉ. शांतनु तामुली विमर्शकर्ताओं में थे। 'संस्कृति की व्याख्या : असमिया उपन्यासों के अनुवाद की चुनौतियां' विषय पर आयोजित विमर्श में डॉ. नगेन सैकिया संचालक के रूप में थे जबकि डॉ. विभाष चौधरी एवं श्री अमृत ज्योति महंता विमर्शकर्ता थे।

लोहित्य नंदिनी (ब्रह्मपुत्र की बेटियां) नाम से एक अभिनव कवयित्री गोष्ठी के आयोजन ने पुस्तकप्रेमियों का मन मोह लिया। इसके अंतर्गत असम की दस कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं का मन मोह लिया। *कंठस्वर* नाम से आयोजित कार्यक्रम में जोरहाट के नवोदित लेखकों का सम्मिलन हुआ। बच्चों के लिए आयोजित कार्यक्रमों में शामिल थे–सिट एंड ड्रॉ प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, कथावाचन प्रतियोगिता, असमिया स्पेलिंग बी प्रतियोगिता, लेखन एवं चित्रकला प्रतियोगिता तथा क्विज प्रतियोगिता।

पुस्तक लोकार्पण एवं 'लेखक से मिलिए' कार्यक्रम भी हुए। समापन समारोह में डॉ. पी.जी. राव, निदेशक, नॉर्थ-ईस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेकनोलॉजी तथा प्रसिद्ध लेखक श्री प्रफुल्ल बोरा सम्मानित अतिथि थे। इस अवसर पर पुरस्कार वितरण समारोह भी हुआ। असम के सांस्कृतिक दूत भूपेन हजारिका को समर्पित सांस्कृतिक संध्या मेले का भव्य एवं मुख्य आकर्षण था।

पुस्तक समीक्षा

गांधी : एक असंभव संभावना (विचार)
सुधीर चंद्र; पृ. 184 ` 250
राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., 1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-02
गांधी अंगरेजों से 32 साल तक लड़े, पर जब देश आजाद हुआ तो वे छह महीने भी ठीक से जीवित नहीं रह पाए कि किसी आततायी हत्यारे ने उन्हें गोलियों से उड़ा दिया। सौ से अधिक वर्ष तक जीने की तमन्ना रखने वाले गांधी आखिर अपने आखिरी समय में क्यों जीवन के प्रति निराश हो गए? वे क्यों और कैसे अकेले पड़ गए? गांधी के आखिरी दिनों को देखने-समझने की कोशिश करती यह किताब कहीं न कहीं हमें अपने अंदर झांकने को भी विवश करती है।

आदमी का डर (कहानी संग्रह); *शेखर जोशी;* पृ. 190 ` 190
भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-03
एक मध्यवर्गीय भारतीय परिवार, स्त्री, श्रमिक और नैतिकता कैसी होती है इसे यों तो अनेक लेखकों ने अनेक बार रूपायित और व्याख्यायित किया है पर शेखर जोशी नितांत अपने ही अंदाज, अपनी ही शैली में इन समस्त स्थितियों और रूपकों को जिस सहज-सरल भाषा में रच देते हैं उसे पढ़ना, उससे होकर गुजरना एक विशिष्ट और अलग ही आस्वाद करा जाता है। पहाड़ के हैं अतः कहानियों में पहाड़ भी है।

जिन्हें मैंने जाना; *उषा महाजन;* पृ. 160 ` 250
कल्याणी शिक्षा परिषद, 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
डायरी, आत्मकथ्य, आत्मकथा और स्मृतियों का मिला-जुला रूप है यह पुस्तक। इस कोलाज विधा को पाठक क्या नाम दें यह उन्हीं पर छोड़ा जाता है। इस पुस्तक में संस्मरणों को लेखिका ने दो भागों में बांटा है। पहले भाग में उनके संपर्क में आईं ख्यात या अल्प ज्ञात महिलाएं हैं और दूसरे में खुशवंत सिंह, शिव खेड़ा आदि सरीखी हस्तियां। इन संस्मरणों को पढ़कर इन शख्सियतों को कुछ अलग ही रूप में देखने-समझने का अवसर मिलता है।

बच्चों को सीख देते अनोखे नाटक; *प्रकाश मनु;* पृ. 174 ` 125
डायमंड पॉकेट बुक्स (प्रा.) लि., X-30, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-20
बच्चों को नाटक बहुत भाते हैं, क्योंकि इसके जरिये व अपनी कल्पनाशीलता का जीवंत और रंगारंग रूप देख पाते हैं। इन नाटकों में बच्चों के कोमल और रंगारंग सपने हैं तो उनके छोटे-छोटे सुख और दुख भी। उनका भोलापन और उनकी शरारतें भी हैं। इन नाटकों को पढ़कर बच्चे ऐसी सीख लेते हैं कि उनमें आंतरिक परिवर्तन की चाहत उमड़ आती है। बच्चे इन नाटकों को स्कूल या सभा-सोसाइटी कहीं भी खेल सकते हैं।

दुर्गादास (उपन्यास); *प्रेमचंद;* पृ. 92 ` 100
भारतीय ज्ञानपीठ, 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया, लोदी रोड, नई दिल्ली-03
'दुर्गादास' प्रेमचंद का एक ऐतिहासिक उपन्यास है। यह मूलतः उर्दू लिपि में लिखा गया था जिसे हिंदी में लिप्यंतरण करके बाद में सन् 1915 में प्रकाशित किया गया। दुर्गादास शूर होकर भी साधु पुरुष थे। प्रकाशक ने इसे किशोरोपयोगी दुर्लभ उपन्यास बताया है।

...मैं था और मेरा आकाश (आत्मकथा)
कन्हैयालाल नंदन; पृ. 208 ` 300
सामयिक प्रकाशन, 3320-21, जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-02
नंदन जी की तीसरी और आखिरी आत्मकथात्मक कृति है यह। इसमें मुंबई से दिल्ली आगमन तथा पराग, सारिका, दिनमान, नवभारत टाइम्स, संडे मेल आदि पत्र-पत्रिकाओं से होते हुए कितने ही पड़ावों से गुजरने के उनके संस्मरण हैं। उनकी विदेश यात्राएं, मीडिया और साहित्य से उनके रिश्ते आदि अन्य कितने ही पहलू भी इसमें समाहित हैं। नंदन जी एवं उनके बहाने उनके समय को जानने-समझने का उपक्रम है यह पुस्तक।

दस बाल नाटक (नाटक संग्रह)
प्रताप सहगल; पृ. 164 ` 240
किताबघर प्रकाशन, 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
रवींद्रनाथ ठाकुर की बाल कहानियों से प्रेरित हैं ये नाटक; उन्हीं बाल कहानियों को बाल नाट्य लेखन का आधार बनाया है उन्होंने। इन नाटकों में जहां टैगोर का समय और परिवेश है वहीं वे हमारे समय के साथ भी कहीं न कहीं जुड़ जाते हैं। इन नाटकों के संदेश बच्चों के लिए तो हैं ही उनके अभिभावकों, शिक्षकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए भी हैं, शायद बच्चों से अधिक।

कुछ सच कुछ सपने (कविता संग्रह)
उमा अर्पिता; पृ. 102 ` 150
नमन प्रकाशन, 4231/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कुछ सच और कुछ सपने ही नहीं हैं इस कविता संग्रह में, वरन अतीत की चुभन है, प्यास और मोहभंग है, विश्वास के साथ ही सवाल हैं, चाहत और फासले भी, और कुरुक्षेत्र भी। सिक्के के तो दो ही पहलू होते हैं पर इस संग्रह के अनेक पहलू हैं। 'कुछ नहीं बदलेगा' से शुरू होकर यह संग्रह अपने अंत तक पहुंचते-पहुंचते बहुत कुछ बदल डालने के भाव से लबरेज है।

गांधारी (नाटक)
शिव मूरत सिंह; पृ. 80 ` 150
विकल्प प्रकाशन, 2226/बी, प्रथम तल, गली नं.-33, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-94
महाभारत की महत्वपूर्ण पात्र गांधारी का समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक उपाख्यान है यह नाटक। गांधारी इसमें अपने चैतन्य चरित्र में मुखरित हुई है। धर्म के पक्ष में खड़ी गांधारी धृतराष्ट्र की वैसी पत्नी साबित होती है कि धृतराष्ट्र उनको पत्नी रूप में पाकर धन्य हो उठते हैं। नाटक की समापन वेला में गांधारी अंततः अपने आंखों पर बंधी पट्टी उतार फेंकती है यह कहते हुए कि अब इसकी कोई भूमिका नहीं रही।

मेरी ग्यारह कहानियां (नाटक संग्रह)
शाद्वल; पृ. 40 ` 40
बसंती प्रकाशन, पी-137, पिलंजी, सरोजिनीनगर, नई दिल्ली-23
किशोर वय में प्रवेश करती एक स्कूली छात्रा की 11 कहानियों का संग्रह है यह पुस्तक। बालमन की ये कहानियां हमें बाल मनोविज्ञान से रूबरू कराती हैं। सहज-सरल भाषा में अपने सपनों, घर-परिवार और परिवेश को कलमबद्ध करती इन कहानियों को पढ़कर एक पाठक भी अपने बालपन में चला जाता है और उन दिनों की याद में डूब-डूब जाता है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया से प्रकाशित 2011 की पुस्तकें

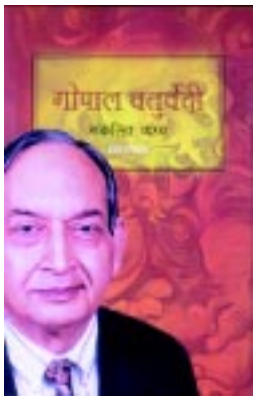

पृ. 202 ` 95

पृ. 264 ` 145

पृ. 338 ` 485

पृ. 120 ` 70

पृ. 84 ` 55

पृ. 80 ` 55

पृ. 12 ` 25

पृ. 28 ` 35

पृ. 48 ` 65

पृ. 24 ` 30

पृ. 52 ` 55

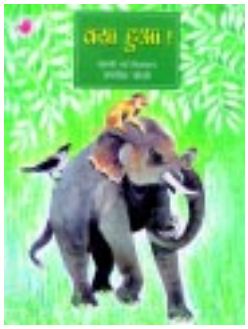

पृ. 24 ` 30

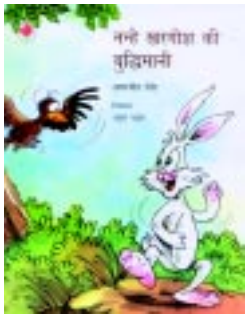

पृ. 12 ` 25

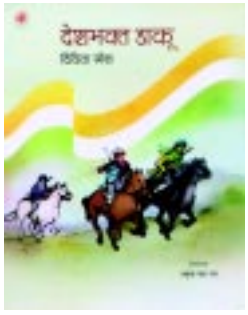

पृ. 20 ` 30

पृ. 12 ` 25

पृ. 16 ` 25

पृ. 24 ` 30

पृ. 16 ` 25

पृ. 24 ` 30

पृ. 20 ` 30

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4077/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2012-14
Mailing date 15/16

ने.बु.ट्र. परिसर में नव वर्ष सम्मिलन

2 जनवरी, 2012, सोमवार को कार्यालय के पहले कार्यदिवस के पहले प्रहर में बादलों से ढंके आकाश और घने कोहरे के बीच ट्रस्ट-परिसर में तृण-आच्छादित खुली जगह पर समस्त ट्रस्ट परिवार एकत्रित हुआ। ट्रस्ट-अध्यक्ष प्रो. विपिन चंद्रा की गरिमामयी उपस्थिति में निदेशक श्री एम.ए. सिकंदर ने समस्त ट्रस्टकर्मियों को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और उनसे शुभकामनाएं प्राप्त कीं।

चिट्ठीघर

आगामी 20वें विश्व पुस्तक मेले की जानकारी प्राप्त हुई। इस प्रतिष्ठित आयोजन के लिए हमारी शुभकामनाएं। ट्रस्ट की विविध गतिविधियों तथा नवीनतम प्रकाशन की जानकारी महत्वपूर्ण हैं।

डॉ. जे. सी. लाड, इंदौर, मध्य प्रदेश

संवाद का दिसंबर अंक। विभिन्न स्थानों पर हुई संगोष्ठियां व पुस्तक प्रदर्शनी का आंखों देखा हाल बड़ी रोचक शैली में पढ़ने को मिल जाता है। इससे निश्चित ही समाज के सभी वर्गों में पुस्तक-पठन के प्रति रुचि जगेगी। 'पुस्तक समीक्षा' स्तंभ ध्यान आकर्षित करता है।

गजानन पाण्डेय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश

आप साहित्य के प्रति बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं, करते रहें।

डॉ. नरेंद्र नाथ लाहा, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

नवंबर का **संवाद** आया/और भाया
यह नवीन सूचनाएं लाया/इसने लुभाया
पुस्तकीय संस्कृति के विकास में इसका अतुलनीय योगदान है
इसीलिए तो **संवाद** का मेरे मन में व्यापक सम्मान है।

प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, मध्य प्रदेश

नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद* भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया का मुख पत्र है।

इस पत्रिका के आलेखों में व्यक्त विचारों से ट्रस्ट की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **दीपक जैसवाल**

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@ndb.vsnl.net.in
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **नेशनल बुक ट्रस्ट *संवाद*** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 की ओर से सतीश कुमार, संयुक्त निदेशक (उत्पादन) द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित; तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070